JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S
ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI
प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर
हिंदी विभागाध्यक्ष

प्रयोजनमूलक हिंदी

बी.ए. द्‍वितीय वर्ष
(पेपर क्र. VIII)
सत्र – चतुर्थ (Semester – IV)

8. 1. 4 'पारिभाषिक शब्दावली' : समस्याओं एवं **समाधान**

प्रा. डॉ. संतोषकुमार लक्ष्मण यशवंतकर
हिंदी विभागाध्यक्ष
कला एवं विज्ञान महाविद्‍यालय
शिवाजीनगर, गढ़ी

'पारिभाषिक शब्दावली' : समस्याओं एवं समाधान

प्रस्तावना :-

पारिभाषिक शब्दावली के निर्धारण में चार पदधतियों का प्रयोग किया जाता है- १) निर्माण २) पाण ३) संचयन ४) अनुकलन । पारिभाषिक निर्धारण की अधिकतर समस्याएँ , इन्हीं चार पदधतियों के साथ जुड़ी है । इन समस्याओं का स्वरूप तथा उसके समाधान का विवेचन निम्न रूप से किया जा सकता है ।

1) निर्माण से सम्बन्धित समस्याएं :-

आवश्यकतानुरूप नये नये पारिभाषिक गड़े जाते है । इस तरह के शब्दों की रचना उपसर्ग , प्रेत्यक्ष तथा समास के सहयोग से की जाती है । इन शब्दो के निर्माण के समय स्रोतभाषा के रूप में किसे अपनाएं यह सबसे बड़ी समस्या होती है । हमारे देश में प्रमुखतः आर्य और द्रविड़ परिवार की भाषाएं बोली जाती है । इसलिए संस्कृत और तामिल स्त्रोत भाषाएं हो सकती है । इनमें से संस्कृत अत्यधिक सम्पर्न्न भाषा है . साथ ही इसमें शब्द - निर्माण की अपर्व क्षमता है । अत : इस समस्या का समाधान वही कर सकती है । इसलिए हमारे अधिकाश पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के लिए स्रोत भाषा के रूप में संस्कृत भाषा को ही अपनाया गया है । निर्माण से सम्बन्धित दूसरी समस्या शब्दों के रचना - विधान की है अर्थात् रचना विधान में उपसर्ग ,

1) निर्माण से सम्बन्धित समस्याएं :-

प्रत्यय समास सम स्नोतीय हो या विषम स्रोतीय ? पुनरुद्धारवादी संप्रदाय के विद्वान समस्रोतीय के पक्ष में है लेकिन प्रयोगवादी या लोकवादी विषम सोतीय प्रत्यय , उपसर्ग तथा समास को प्रा मानते हैं ।

सम मोतीय रचना विधान से निर्मित शब्द संस्कृत के होते हैं और विषम स्रोतीय रचना विधान से निर्मित शब्द बहुत बार भीड़े लगते हैं । इसलिए दोनों के बीच का मार्ग अपनाना लाभप्रद होता है । संस्कृत के बहुप्रचलित प्रत्यय , उपसर्ग आदि का प्रयोग तथा समासों में सन्धि की अपेक्षा हाइफन का प्रयोग ही उचित समझा जाता रहा है । निर्माण से सम्बन्धित एक समस्या यह भी है कि किन शब्दों का निर्माण करे ? किसी धारणा या क्रिया तथा वस्तु के लिए प्रचलित शब्दों में से एक का चयन करें या उसके लिए नये शब्द का ही निर्माण करें । पुनरुद्धारवादी विद्वानों ने जो पारिभाषिक कोष बनायें है उनमें बहुप्रचलित शब्दों की उपेक्षा कर नये शब्द बनाये है , जिससे नये शब्द प्रचलित नहीं हो पाये है । तो दूसरी ओर हर अपनाना लाभप्रद कहा जा सकता है । चीज के लिए प्रचलित शब्दों में से शब्दों का चयन भी संभव नहीं है । इसलिए यहाँ भी मध्यमार्ग

2) ग्रहण से सम्बन्धित समस्याएँ :-

शब्दों का अहण सामान्य भाषा में भी पाया जाता है | सामाजिक , राजनैतिक , सांस्कृतिक , धार्मिक सम्पर्क से विभिन्न भाषा - भाषी लोगों में शब्दों का आदान - प्रदार्न होता है | पारिभाषिक शब्दों के धरातल पर भी यह आदान - प्रदान होता रहता है | अत : रहण मूलतः समस्या नहीं है | परंतु जब सबकुछ अन्य भाषा से ग्रहण करे या अन्य भाषा से कुछ भी पहण न करें जैसी अतिवादी विचारधारा प्रचलित हो जाती है. , तब हम एक समस्या बन जाती है | पारिभाषिक शब्दावली के क्षेप में एक संप्रदाय बाणवादी भी है | उनके अनुसार हमें पारिभाषिक शब्दावली बनाने की आवश्यकता नहीं है | केवल अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरण कर उसका ग्रहण करना चाहिए | इससे समस्या यह बन जाएगी श्री देवनागरी लिपि में अंग्रेजी न तो अपनी भाषा बनेगी न मूल अंग्रेजी | अत : इस तरह का अतिवाद अनुपयुक्त ही नहीं हास्यास्पद भी है । ठीक इससे विपरीत पुनरुद्धारवादियों की धारणा है कि अन्य भाषा में एक भी शब्द प्रहण न कर उसके लिए नये शब्द बनाने चाहिए | यह अतिबाद भी अनुपयुक्त है | अन्य भाषा के कुछ शब्द इतने प्रचलित हो जाते है कि उसके स्थान पर बनाये गये नुये शब्द मा अपने स्थान पर ही बने रहते हैं , प्रयुक्त नहीं किये जाते | अत : यहाँ भी मध्य मार्ग अपनाना आवश्यक हो जाता है । इसलिए सबसे पहले तय करना होता है कि किन शब्दों का ग्रहण करें | विज्ञान तथा तकनीकी से सम्बन्धित कुछ अंतर्राष्ट्रीय शब्द का ग्रहण किया जाना उपयुक्त है , परंतु प्रशासन , कानून , राजनीति , सामाजिक विज्ञान आदि के लिए बहुप्रचलित शब्दों का दहण किया जाना चाहिए | अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के ग्रहण का अत्याह इस क्षेत्र में उचित नहीं होगा |

3) अनुकूलन से सम्बन्धित समस्याएँ :-

महित शब्दों को अपनी भाषा के अनुकूल बनाने की प्रक्रिया अनुकूलन ' कहलाती है । अनुकूलन मूलतः दो तरह का होता है- ध्वन्यानुकूलन तथा २) शब्दानुकूलना किसी शब्द को अपनी ध्वनियों के अनुकूल बनाकर अपनाना ध्वन्यानुकूलन कहलाता है । जैसे टेकनिक से तकनीकी । विदेशी शब्दों की धातु मानकर अपने व्याकरण की सहायता से नया रूप देना शब्दानुकूलन कहलाता है । जैसे Amoniated से एमोनीकृत । ऐसे शब्दों के साथ उड़ी प्रथम समस्या यह है कि मात्र लिप्यन्तर से जो शब्द बनेगा क्या वह अपनी भाषा में प्रचलित होगा ? अत : यहाँ भी उन्ही शब्दों का अनुकूलन व्यवहार्य है , जिसके लिए विशेष रूप निर्माण या तो असंभव हो या प्रचलन की संभावना कम हो ।

4) 'संचयन' से सम्बन्धित समस्याएँ :-

अपनी भाषा में प्रचलित शब्दों में से उपयुक्त शब्दों को पारिभाषिक अर्थ में प्रचलन संचयन कहताता है । इस प्रक्रिया के साथ जुड़ी पहली समस्या यह है कि शब्द - चयन का आधार क्या हो ? दूसरी समस्या है एक ही शब्द पारिभाषिक रूप में प्रयुक्त होने पर नियतार्थता में बाधा आ जाती है । संचयन प्रक्रिया द्वारा पारिभाषिक शब्दों का निर्धारण विज्ञान , तकनीकी क्षेत्र की अपेक्षा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में अधिक संगत हो सकता है । प्र .६ : हिन्दी शब्द - समूह का परिचय दीजिए । उत्तर : किसी भाषा का शब्द - समूह उस भाषा - विशेष का शुद्ध रूप नहीं हुआ करता है । यदि यह कथन किसी भाषा के लिए अपवाद सिद्ध होगा तो निश्चय ही उस भाषा के लिए मृतक विशेषण का प्रयोग किया जा सकता है । कोई भाषा अपने व्यावहारिक क्षेत्र में जितने शब्द - समूह भाषा विशेष के साहित्य में प्रयुक्त , समाज में व्यवहृत , कोशों में संगृहीत , चिन्तन और दर्शन के क्षेत्र में प्रयुक्त करती है , उनका रूप या बाँचा अनुभूत शब्दों के आधार पर खड़ा रहता है । शब्द - समूह के प्रयोग की दृष्टि से कोई भी भाषा विशुद्ध नहीं कही जा सकती । ' विशुद्ध ' से केवल इतना ही तात्पर्य है कि अन्य भाषाओं के शब्दों के ग्रहण के साथ - साद भाषा विशेष ने अपनी जननी भाषाओं के शब्दों

अस्वीकरण

निम्नलिखित वीडियों विभिन्न पुस्तकों , मीडिया , इंटरनेट अंतरिक्ष , आदि से एकत्र किए गए शोध और केस स्टडीज पर आधारित है । संतोषकुमार यशवंतकर और निर्माता वीडियो में निहित जानकारी की सटीकता , सामग्री , पूर्णता , वैधता या विश्वसनीयता के लिए किसी भी जिम्मेदारी या दायित्व को स्वीकार नहीं करते हैं । वीडियो पूरी तरह से शैक्षिक उद्देश्यों के लिए बनाया गया है और किसी व्यक्ति , व्यक्तियों , संस्था , कंपनी या किसी के शरीर को नुकसान पहुंचाने , चोट पहुंचाने या बदनाम करने के इरादे से नहीं बनाया गया है । इस वीडियो का उद्देश्य किसी भी धर्म , समुदायों या व्यक्तियों की अफवाहों को फैलाना , अपमानित करना या उन्हें चोट पहुंचाना या किसी व्यक्ति (जीवित या मृत) के प्रति असहमति पहुंचाना नहीं है , दर्शक को हमेशा अपना परिश्रम करना चाहिए और जो कोई भी इसमें शामिल होना चाहता है वीडियो में इसके लिए पूरी जिम्मेदारी लेता है । साथ ही , यह उनके स्वयं के जोखिम और परिणामों पर किया जाता है । इस वीडियो में शामिल सामग्री किसी भी क्षेत्र में सेवाओं या प्रशिक्षित पेशेवरों के लिए प्रतिस्थापन या प्रतिस्थापन नहीं कर सकती है , लेकिन वित्तीय , चिकित्सा , मनोवैज्ञानिक या कानूनी मामलों तक सीमित नहीं है । डॉ । संतोषकुमार यशवंतकर और निर्माता वीडियो पर आधारित किसी भी कार्रवाई के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्पन्न होने वाले किसी भी प्रत्यक्ष , अप्रत्यक्ष , निहित , दंडात्मक , विशेष , आकस्मिक , या अन्य के लिए जिम्मेदारी नहीं लेते हैं । डॉ । संतोषकुमार यशवंतकर और वीडियो के निर्माता किसी भी तरह के परिवाद , निंदा या किसी अन्य प्रकार के दावे या किसी भी प्रकार के दावे को स्वीकार करते हैं । दर्शकों को विवेक की सलाह दी जाती है शर्तें लागू करें ।

इस व्हिडियों / PPT का उदेश्य केवल अध्यापन के लिए है, न कि प्रसिद्धी पाने के लिए। इसका समग्र श्रेय सभी महानुभवों को जाता है जिन-जिनकी सामग्री का उपयोग यह बनाने के लिए हुआ है। मैं उन समस्तजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुं जिनकी सामग्री का उपयोग यह व्हिडियों / PPT के लिए हुआ है। यह मेरी कोई मौलिक उपलब्धी नहीं है और न ही कोई सृजनात्मकता। इस का उदेश्य केवल और केवल छाञों तक पहुँचाना हैं। इससे किसीके दिल को प्रत्यक्ष या परोक्षरुप से कोई ठेस या आहत पहुँचती है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हुँ - आपका प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S
ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI
जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता.गेवराई जि.बीड)
धन्यवाद
प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर